2018-19

ISSN 0975-3486

1 June-2019, Vol.-VI, Issue-117

AN INTERNATIONAL LEVEL PEER REVIEWED REFERRED REGISTERED RESEARCH JOURNAL

Impact Factor-6.315(SJIF)

UGC APPROVED
&
LISTED-41022

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION JAIPUR INDIA RAE

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

रिसर्च एनालिसिस एण्ड इवैल्युएशन

DESHABANDHU MAHAVIDYALA CHITTARANJAN

EDITOR
Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ugcjo... .com

International Indexed Peer Reviewed, Referred, Research Journal, ISSN-0975-3486(Print),E-ISSN-2320-5482, Published on 01 June ,2019 19

डॉ0 राहुल सांकृत्यायन का भाषिक चिंतन

* डॉ0 जोतिमय बाग

* देशबन्धु महाविद्यालय, चितरंजन

डॉ0 राहुल सांकृत्यात्यन बहुमुखी प्रतिमा सम्पन्न व्यक्ति थे। उनके पास जितना बड़ा कवि हृदय था, उतना ही बड़ा एक इतिहासकार और आलोचक का मस्तिष्क भी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में कहे तो उनके चरित्र के निर्माण में 'बुद्धि और हृदय' का मणि–कांचन संयोग हुआ था। हम यहाँ उनके भाषिक चिंतन का जायजा लेंगे।

राहुल जी जन–जीवन की भाषाओं पर अधिक ध्यान देते थे। उनके अनुसार जन–जीवन की भाषाओं में रचा हुआ साहित्य ही उत्कृष्ट साहित्य है। हिन्दी की मूल भाषा कौरवी बोली है, सिद्ध कवियों की भाषा, हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, साहित्यकार का दायित्व, साहित्यिक प्रगति की बाधाएँ। आदि ये उनके कुछ लेख है जिनमें हम उनके भा िक चिंतन को देख सकते है।

डॉ0 राहुल सांकृत्यायन अपभ्रंश साहित्य को विशेष महत्त्व दे रहे थे, इसलिये अपने इतिहास में अपभ्रंश साहित्य को उन्होंने विशेष महत्त्व दिया। वैदिक संस्कृत के स्थान पर अपभ्रंश जैसी अव्यवस्थित भाषा पर उनके चिंतन–मनन दरअसल उनके जन–भाषा के प्रति रूझान को साफ दर्शाता है। क्योंकि उनका साफ मानना है कि वैदिक संस्कृत समय में संस्कृत लोक–भाषा नहीं थी, उस समय आमजन में पालि–प्राकृत–अवभ्रंश प्रचलित थी। अपभ्रंश भाषा–साहित्य, हिन्दी साहित्य के लिये नवीन नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'प्राकृता भास', गुलेरी जी की 'पुरानी हिन्दी', इन नामों से हम भलि–भांति परिचित है। राहुल जी ने सिद्धों और नाथों के साहित्य को हिन्दी से इतर नहीं समझा, साथ ही सिद्धों, नाथों और जैनों से प्रभावित होकर उन्होंने आदि काल का नामकरण 'सिद्ध सामंत' युग रखा। आज अगर हम हिन्दी साहित्य के अंतर्गत स्वयंभू देव, सरहप्पा, शबरपा, कन्हप्पा, लुईपा जैसे कवियों को पढ़ते है, तो इसके पीछे राहुल जी जैसे लेखकों के योगदान को हम नहीं नकार सकते है। हिन्दी काव्यधारा में राहुल जी ने 47 अपभ्रंश कवियों का संकलन किया है। राहुल जी ने स्वयंभू को केवल अपभ्रंश का ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य का उत्कृष्ट कवि घोषित किया है। जैनों के अवदानों पर चर्चा करते हुए राहुल जी कहते है– राजस्थानी और गुजराती ही नहीं बल्कि द्रविड़ वंश की कन्नड़ जैसी भाषाओं के भी प्राचीनतम साहित्य जैनों के द्वारा सिले गये और उन्हीं के द्वारा सुरक्षित हुए। जैन धर्म और अपने भारत में रहते समय बौद्ध धर्म भी, लोक भाषा का बहुत आदर करता रहा, उसमें साहित्य निर्माण कर उसे सुरक्षित करता रहा। (राहुल निबंधावली, पृ0–32)

एक मार्क्सवादी आलोचक होने के नाते राहुल जी के भाषा चिंतन में हम समाजवादी दृष्टि को पाते है। किन्तु यह भी एक सत्य है कि, अपनी इन्हीं भाषा–दृष्टि के चलते राहुल जी को कम्युनिष्ट पार्टी से निकाल दिया गया था। 1947 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंच से दिये गये राहुल जी के भाषण के कारण तात्कालीन कम्युनीष्ट पार्टी के महासचिव पी0 सी0 जोशी ने उन्हें पार्टी से निष्काषित किया था। प्रश्न यह उठता है कि राहुल जी ने ऐसा क्या कहा था कि, बाद में इतना कोहराम मच गया। राहुल जी समेत कम्युनिष्ट पार्टी का एक खेमा ऐसा था जिनका मानना था कि, जिन प्रदेशों की भाषा में मुसलमानों का बहुमत है, अगर वे अलगाव की मांग करते है, तो उसे हिन्दुओं को मान लेना चाहिए।' बस फिर क्या था, तुरंत ही राहुल जी को देशद्रोही करार दिया गया और पार्टी से निकाला भी। डॉ0 रामविलास शर्मा राहुल जी की भाषण पर टिप्पणी करते हुए लिखा है– हिन्दी भाषी जनता की ऐकता की तरफ राहुल जी का दृष्टिकोण मुख्यत: विघनकारी रहा है। इसका पहला कारण यह है कि वह हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति की धारणाओं से अपने को मुक्त न कर सके।

हिन्दी को वह हिन्दुओं की भाषा और उर्दू को मुसलमानों की भाषा मानते रहे है। गौरतलब है कि बंगला भाषा के नाम पर बंगलादेश निर्माण में ऐसे कम्यनिष्टों को कोई परेशानी नहीं हुयी, किन्तु उर्दू के नाम पर पाकिस्तान निर्माण से कुछ खफा। राहुल जी हिन्दू–मुस्लिम की इस धर्मान्धता को समझ रहे थे। आगे चलकर डा0 नामवर सिंह अपने लेख 'बासी भात में खुदा का साझा' में भाषा के प्रश्न को अस्मिता से जोड़ देते है। वे लिखते है– उर्दू का सवाल भाषाई सवाल नहीं है, सवाल मुस्लिम अस्मिता का है और वह सवाल मूलत: राजनीतिक है जिसकी जड़े इतिहास में है। (हंस, मार्च–1987)

महात्मा गांधी ने 'हिन्दुस्तानी' भाषा का समर्थन किया था। ये वही भाषा थी जिसे पहले 'रेख्ता' कहा जाता था। यानि ऐसी भाषा जिसमें सभी जन–भाषाओं की बोली हो। किन्तु बाद में सरकारी हिन्दी जनपदिय जड़ों से कट कर संस्कृत के रेगिस्तान में गुम हो गयी। संविधान की धारा 351 का ज़रा जायजा लिजिए इसमें कहा गया है कि केन्द्र का कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा के प्रसार को बढ़ावा दे, इसका विकास करे ताकि यह भारत की संम्लिष्ट संस्कृति के सभी अंगों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके, हिन्दुस्तानी तथा अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूपों, शैलियों और व्यंजनाओं के सम्मिलन द्वारा इसकी समृद्धि का प्रबंध करें। और इसके शब्द भंडार का स्रोत प्राथमिक रूप से संस्कृत

2018 – 2019

ISSN 0974-2832 April-2019, Vol-IV, Issue-123

AN INTERNATIONAL LEVEL PEER REVIEWED REFERRED REGISTERED RESEARCH JOURNAL

Impact Factor-5.901(SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

शोध समीक्षा और मूल्यांकन

UGC APPROVED
&
LISTED-41004

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

AN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL
S.S.M.
R.A.E.
JAIPUR INDIA

DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA
CHITTARANJAN

Edi

Dr. KRISHAN BIR SIN

www.ugcjournal.co

International Indexed, Peer Reviewed & Refereed Journal, ISSN -0974-2832, April,2019 ISSUE-123

रामविलास शर्मा की आलोचनात्मक दृष्टि

* डॉ0 जोतिमय बाग

* देशबन्दु महाविद्यालय, चित्तरंजन

मेरे इस लेख का मुख्य आलोच्य विषय नवीन परम्परा खास कर मार्क्सवादी दृष्टि को लेकर है। साथ ही इस दृष्टि को प्रसिद्ध विचारक, आलोचक डॉ0 रामविलास शर्मा किस रूप में देखते और समझते है। कुछ हद तक मैं अपने लेख का दायरा हिन्दी क्षेत्र तक सीमीत भी रखुंगा। मुख्य विषय को मैंने दो भागों में बांटकर देखा है।

1) मार्क्सवादी दृष्टि (भारतीय संदर्भ में)

2) रामविलास शर्मा की मार्क्सवादी .दृष्टि

समाज और संस्कृति पर पैनी निगाह रखने वाले डॉ0 रामविलास शर्मा की दृष्टि मार्क्सवादी रही है। उन्हीं के शब्दों में 'प्राचीन साहित्य के मूल्यांकन में हमें मार्क्सवाद से सहायता मिलती है।' डॉ0 शर्मा मार्क्सवादी दृष्टि को भारतीय संदर्भ खासकर हिन्दी जाति के संदर्भ में व्याख्यायित करते है। शुद्ध रसवादी दृष्टि को वह ग्राह्य नहीं करते हैं। डॉ0 शर्मा मार्क्सवादी दृष्टि से परम्परा के महत्त्व को समझाते है। भारतीय परम्परा पुरातन है और नवीन भी। संस्कृत काल से ही इस देश में बड़े–बड़े सामाजिक चिंतक पैदा हुए है, जिन्होंने अपनी दृष्टि से लोगों को प्रभावित किया, इन महापुरूषों की दृष्टि आज भी हमारे लिए आलोचना का विषय बना हुआ है। दूसरी तरफ हमारे पास नवीन सामाजिक विचारक है, ये भी उतने ही प्रभावी रहे है, जितने की पुरातन। पुरातन एवं नवीन दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन शोध कर्त्ताओं के लिए आज एक बड़ी उर्वरक ज़मीन बनती जा रही है। अतः अपने लेख के शुरूआत में ही मैंने कहा है– 'भारतीय परम्परा पुरातन है और नवीन भी।'

मेरे इस लेख का मुख्य आलोच्य विषय नवीन परम्परा खास कर मार्क्सवादी दृष्टि को लेकर है। साथ ही इस दृष्टि को प्रसिद्ध विचारक, आलोचक डॉ0 रामविलास शर्मा किस रूप में देखते और समझते है। कुछ हद तक मैं अपने वक्तव्य का दायरा हिन्दी क्षेत्र तक सीमीत भी रखुंगा। सीमीत रखने का प्रमुख कारण आलोच्य आलोचक डॉ0 रामविलास शर्मा ही है। क्योंकि उनकी स्थापना 'हिन्दी क्षेत्र– हिन्दी जाति' को लेकर ही है। तो आईए सर्वप्रथम नवीन परम्परा यानि 'मार्क्सवादी दृष्टि' पर चर्चा करते है।

भाग–1

मार्क्सवादी दृष्टि (भारती संदर्भ मे)

मार्क्सवादी दृष्टि वस्तुओं को वैज्ञानिक, वैचारिक और वस्तुवादी दृष्टियों से दृष्टिपात करती है। तथ्य और तर्क इसकी मूल कसौटी है। मार्क्सवादी विचार धारा एक तरफ जहाँ समाज के निम्नवर्ग जैसे किसान, मज़दूर, दलित के पक्ष में खड़ी होती है, वही संभ्रांत वर्ग के विरूद्ध विद्रोह का जयघोष भी करती है। वर्तमान सांस्कृतिक संकट के मद्देनजर मार्क्सवादी दृष्टि अत्यधिक प्रासंगिक भी है। आज का सांस्कृतिक संकट इसलिए और खतरानक है क्योंकि भारतीय समाज के वे सारे संकट जिनका समाधान नहीं ढूंढा गया, नहीं ढूंढने दिया गया और नहीं ढूंढा जा सका वे सब आज शासक वर्गो की शह पाकर स्थिति को अनुकूल पा रहे हैं और सिर उठा रहे हैं, क्योंकि शासक वर्ग स्वयं संकटग्रस्त होने के कारण अपने शत्रुओं अर्थात मेहनतकश जनता (किसान, मज़दूर आदि) को भारमाए–भटकाए रखने के लिए स्वयं अपने शत्रुओं से हाथ मिलाकर उन्हें खुलकर खेलने दे रहा है। एक उदाहरण देकर मैं अपनी बात स्पष्ट करना चाहुँगा– सामन्तवाद पूंजीवाद का प्रकृत्या शत्रु है पर मेहनतकश से लड़ने के लिए फ्रांस की क्रांति के समय ही पूंजीवाद ने सामन्तवाद से समझौता कर लिया और आज सारी दुनिया में, भारत जैसे पिछड़े देशों में तो विशेष रूप से, सामन्तवाद को जीवन दान पूंजीवाद ही प्रदान कर रहा है–अपने रक्षार्थ, चाहे वह अर्थतंत्र में हो, राज्यतंत्र में हो या समाजतंत्र में। इतिहास के समस्त संकटों में आ जुड़े हैं नए संकट।

पूँजीवाद, आज के युग में विजयी मंत्र बनता चला जा रहा है– वह अपने अलावा अन्य सभी का अन्त घोषित कर रहा है। किन्तु पूँजीवाद इस बात से अनभीज्ञ नहीं है कि उसका अंत भी प्रकृति और इतिहास में निहित है। पूँजीवाद यह भी जानता है कि वह जिनके भी अंत की घोषणा कर रहा है वास्तव में उनका अंत हो ही नहीं सकता न इतिहास का, न कविता का, न विचारधारा का –ये सब मानव समाज की अन्तहीन यात्रा की अमर उपलब्धियां है। ये मनुष्य के सपने को, संघर्ष को कभी मरने नहीं देंगी। आधुनिक समाज भले ही एकाकी, अजनबीपन, आत्म केन्द्रित, नियतिवाद, व्यक्तिवाद और संकीर्णता की बात करता हो, किन्तु यह ध्यातव्य होना चाहिए कि इसी समाज में 'कब्कटस' की तरह ऊगे एक वर्ग ऐसा भी है जो एकजुटता, चेतनशीलता, संघर्षशीलता की बाते भी कह रहा है। टेकनॉलॉजी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

ar : 9
sue : 34 (Part-II)
ril-June 2019
vw. chintanresearchjournal.com
pact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन Chintan Research Journal
रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(UGC Approved List No. 41243)

संपादक
आचार्य (डॉ.) शीलक राम

2018-19

आचार्य अकादमी
यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA CHITTARANJAN
Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

आचार्य अकादमी
भारत
ISO 9001:2008

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
International Refereed वर्ष 9, अंक 34(II) (पृ.सं. 387-388)
Impact Factor : 4.012
विक्रमी सम्वत्: 2077 (अप्रैल-जून 2019)

तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं महत्त्व

डॉ॰ जोतिमय बाग
देशबन्दु महाविद्यालय
चित्तरंजन

शोध-आलेख सार

'तुलनात्मक साहित्य' पर बात करते हुए रेने वेलेक पर बात न हो तो इस पद्धति के साथ अन्याय होगा, वेलेक उन लोगों में से है- जिन्होंने इस पद्धति के नींव को मजबूती प्रदान की। उनका कथन है कि-'तुलनात्मक साहित्य' साहित्य के समग्र रूप का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एक रस अखण्ड होती है। आज ग्लोबलाइजेशन के इस दौड़ में वेलेक का यह कथन और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

मुख्य-शब्द : तुलनात्मक साहित्य ।

वैसे तो तुलनात्मक साहित्य की प्रवृत्तियाँ अभी तक स्थिर नही हो पायी है, इस पर अभी भी शोध-कार्य प्रगति पर है। पर संक्षेप में कहे तो यह अध्ययन एक सर्वभौम साहित्य की ओर ले जाती है। 'तुलनात्मक' शब्द अंग्रेजी के "Compare' शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। इसका अर्थ है- "To bring together or side by side in order to note points of difference and more especially likeness to note an express the resemblance between"- (Oxford) तुलना शब्द से विदित है कि तुलना में एकाधिक का होना आवश्यक है। इस पद्धति की विशेषता यह है कि यह दो साहित्य, दो साहित्यकारो, या दो विधाओं को करीब से जानने का साधन है, जिसमें इसकी विशिष्टता उजागर होती है। 'मेक्समूलर' का कथन है- "All higher knowledge is gained by comparison and rests on comparison."

अन्वेषण करते वक्त तथ्यों पर मूल्यांकन करने की अनेक पद्धतियाँ है जैसे आलोचनात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, भाषा वैज्ञानिक पद्धति, समस्यामूलक पद्धति और साथ ही 'तुलनात्मक पद्धति' शोध जगत में इस पद्धति का महत्त्व दिनोदिन बढ़ रहा है। प्रसिद्ध आलोचक टी0 एस0 इलियट को इस संदर्भ में याद किया जा सकता है, उनका कथन है- तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औजार है। मूल्यांकनपरक आलोचना की श्रेष्ठता को मापने के लिये तुलनात्मक पद्धति का लाभ उठाती है।

'तुलनात्मक साहित्य' पर बात करते हुए रेने वेलेक पर बात न हो तो इस पद्धति के साथ अन्याय होगा, वेलेक उन लोगों में से है- जिन्होंने इस पद्धति के नीव को मजबूती प्रदान की। उनका कथन है कि-'तुलनात्मक साहित्य' साहित्य के समग्र रूप का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एक रस अखण्ड होती है।" आज ग्लोबलाइजेशन के इस दौड़ में वेलेक का यह कथन और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

2018 – 19

RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

An Overview on Impact of Electromagnetic Radiations on Environment and Human Health

[1]Siba Prasad Mandal and [2]Mousumi Kundu

[1]Department of Physics, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India
[2]Department of Chemistry, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 March 2019

Keywords
Electromagnetic radiation, Human health, Disruptions, Wi-Fi Routers, Electromagnetic field

ABSTRACT

Electromagnetic radiation, emitted by various natural and human-made sources, has become an integral part of modern life. The article gives an overview on dual impact of electromagnetic radiations on both the environment and human health. On the environmental front, concerns center on electromagnetic pollution, with potential disruptions to wildlife and ecosystems. Studies indicate that electromagnetic fields may interfere with the navigation abilities of birds and insects, raising questions about their impact on biodiversity and ecological balance. Additionally, the energy consumption associated with electromagnetic radiation-emitting devices contributes to the broader conversation on climate change. The abstract emphasizes the importance of regulations, guidelines, and technological innovations to mitigate potential risks, emphasizing the need for continued scientific exploration and public awareness to strike a harmonious equilibrium between technological progress and the well-being of both humans and the environment.

Introduction

The ubiquitous presence of electromagnetic radiation in our modern world has become a subject of growing concern, prompting extensive research into its potential impact on both the environment and human health. Several publications in the scientific literature have raised concern about the individual and public health impact of adverse non-ionizing radiation from electromagnetic field (EMF) exposure emanating from certain power, electrical and wireless devices commonly found in the home, workplace, school and community[1].As our reliance on these technologies intensifies, so does our exposure to electromagnetic fields (EMFs), raising questions about their long-term consequence. Studies have indicated that prolonged exposure to high levels of electromagnetic radiation may have adverse effects on the environment. For instance, it has been observed that certain wildlife species are sensitive to electromagnetic fields, affecting their behavior, navigation, and reproductive patterns[2]. Additionally, the electromagnetic pollution generated by human activities contributes to the alteration of natural electromagnetic environments, potentially disrupting ecosystems and biodiversity[3]. Human health is another focal point of concern, given the omnipresence of electronic devices and wireless communication. The increasing use of mobile phones, Wi-Fi networks, and other wireless technologies exposes individuals to varying degrees of electromagnetic radiation. Some research suggests a potential link between prolonged exposure to EMFs and health issues such as sleep disturbances, headaches, and an increased risk of certain cancers[4]. Furthermore, the evolving landscape of technology introduces new challenges as 5G networks are deployed, intensifying the debate on their potential health implications. As we delve into this intricate web of electromagnetic fields, it is imperative to critically examine existing data and research findings to better comprehend the multifaceted impact of electromagnetic radiation on both the environment and human well-being. This exploration is crucial in formulating informed policies and adopting technologies that strike a balance between the conveniences of modern life and the preservation of environmental and human health[5].

Electromagnetic Radiation

A wide range of energy waves, from radio waves with large wavelengths to gamma rays with very small wavelengths, are together referred to as electromagnetic radiation. With oscillating electric and magnetic fields perpendicular to each other and the direction of motion, this radiant energy travels across space like a wave[6]. The spectrum is made up of a variety of waves with varying frequencies, wavelengths, and energies. These waves include visible light, ultraviolet, X-rays, gamma rays, infrared, and radio waves. Surprisingly, every element of this spectrum has a specific function: radio waves transmit information, microwaves heat objects, visible light is important for photosynthesis in biology and X-rays may be used for medical imaging diagnostics. Fundamentally, electromagnetic radiation comes from a variety of natural sources, including the sun, stars, and Earth itself. However, human activity also produces a significant quantity of electromagnetic radiastion, particularly from power lines, wireless communication, and technological equipment[7]. Although radiation plays a vital part in both natural processes and technology, prolonged exposure to certain types of radiation, such as ionizing radiation or UV radiation from the sun, may be harmful to health. It can damage DNA and raise the chance of developing certain types of cancer[8]. Comprehending and using the characteristics of electromagnetic radiation has not only transformed communication and technology but also significantly contributed to scientific research and medical progress[9].

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan
DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA CHITTARANJAN

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ARTICLE IN PRESS

2018 – 19

Tetrahedron xxx (xxxx) xxx

Contents lists available at ScienceDirect

Tetrahedron

journal homepage: www.elsevier.com/locate/tet

Synthesis and characterization of nano–zinc wire using a self designed unit galvanic cell in aqueous medium and its reactivity in propargylation of aldehydes

Bibhas Mondal [a, b], Siba Prasad Mandal [c], Mousumi Kundu [d], Utpal Adhikari [b], Ujjal Kanti Roy [a, *]

[a] Department of Chemistry, Kazi Nazrul University, Asansol 713340, India
[b] Department of Chemistry, National Institute of Technology Durgapur, Durgapur 713209, India
[c] Department of Physics, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India
[d] Department of Chemistry, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India

ARTICLE INFO

Article history:
Received 7 May 2019
Received in revised form
5 July 2019
Accepted 6 July 2019
Available online xxx

Keywords:
Electrochemistry
Aqueous
Propargylation
Zinc
Nano wire

ABSTRACT

Electrochemistry is used for propargylation of carbonyls in aqueous $ZnCl_2$ medium. For electrochemical process we designed a unit galvanic cell. $ZnCl_2$ is used as stoichiometric reagent and causes electrochemical deposition of zinc in cathode. Wire shaped nano zinc architecture has been formed in cathode during electrochemical process which is the active reagent. Homopropergylic alcohols are synthesized in good yields. After the organic reaction is over aqueous solution containing zinc salts can be reused up to 5th cycle without significant loss of reactivity.

© 2019 Published by Elsevier Ltd.

1. Introduction

Electrochemical methods can eliminate or dispose the waste materials and recycle the metal reagents [1]. For that reason electrochemical methods are excellent approach to green synthesis. On the other hand, aqueous reactions have been widely studied in order to reduce the use of flammable, toxic, or carcinogenic organic solvents [2]. A combination of aqueous and electrochemical conversion will be an excellent green synthetic approach [1,3].

During the electrochemical process new metal nano architecture is formed that can create interest as the new material. Due to higher surface area of the deposited nano-material reactivity on electrode will also be increased. Nano architecture with particular size and shape can be synthesized by electrodeposition. Because of their applications in nanotechnology material chemists will be interested with these newly synthesized nano architecture. Metallic nano-wires also have huge technological applications like electronic displays, touch screens, and solar cells [4,5]. To the best of our knowledge, electrochemical synthesis of wire like nano architecture of metallic zinc from aqueous $ZnCl_2$ solution was first reported from our laboratory [6]. Here we wish to report propargylation of carbonyls using electrochemical process when nano wire architecture of pure metallic zinc is formed on cathode. Aqueous $ZnCl_2$ solution is used as starting material for the electrochemical process. In situ formed zinc nano wire is the active reagent for propargylation. Synthesis of homopropargylic alcohols by propargylation of carbonyls is synthetically very important in organic chemistry because of their use as building blocks in natural product synthesis. Metal-mediated propargylation reactions are well-known examples of green aqueous reactions [7,8]. But in most of the cases over stoichiometric amount of metal is used and the corresponding metal salt is generated as waste material. Lots of research has been done on developing metal mediated propargylation reactions in aqueous media. But direct use of $ZnCl_2$ is new and reported for the first time from this laboratory for Barbier type propargylation [6]. Among the successful metals zinc is very cheap and low toxic to mediate the Barbier-type reactions [9]. In most of the cases, physical or chemical activation is necessary.

* Corresponding author.
E-mail address: uroccu@gmail.com (U.K. Roy).

https://doi.org/10.1016/j.tet.2019.07.012
0040-4020/© 2019 Published by Elsevier Ltd.

Please cite this article as: B. Mondal et al., Synthesis and characterization of nano–zinc wire using a self designed unit galvanic cell in aqueous medium and its reactivity in propargylation of aldehydes, Tetrahedron, https://doi.org/10.1016/j.tet.2019.07.012

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

RESEARCH REVIEW JOURNALS Volume-04 Issue-03 March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

An Overview on Impact of Electromagnetic Radiations on Environment and Human Health

2018-19

[1]Siba Prasad Mandal and [2]Mousumi Kundu

[1]*Department of Physics, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India*
[2]*Department of Chemistry, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India*

DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA CHITTARANJAN

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 March 2019

Keywords
Electromagnetic radiation, Human health, Disruptions, Wi-Fi Routers, Electromagnetic field

ABSTRACT

Electromagnetic radiation, emitted by various natural and human-made sources, has become an integral part of modern life. The article gives an overview on dual impact of electromagnetic radiations on both the environment and human health. On the environmental front, concerns center on electromagnetic pollution, with potential disruptions to wildlife and ecosystems. Studies indicate that electromagnetic fields may interfere with the navigation abilities of birds and insects, raising questions about their impact on biodiversity and ecological balance. Additionally, the energy consumption associated with electromagnetic radiation-emitting devices contributes to the broader conversation on climate change. The abstract emphasizes the importance of regulations, guidelines, and technological innovations to mitigate potential risks, emphasizing the need for continued scientific exploration and public awareness to strike a harmonious equilibrium between technological progress and the well-being of both humans and the environment.

Introduction

The ubiquitous presence of electromagnetic radiation in our modern world has become a subject of growing concern, prompting extensive research into its potential impact on both the environment and human health. Several publications in the scientific literature have raised concern about the individual and public health impact of adverse non-ionizing radiation from electromagnetic field (EMF) exposure emanating from certain power, electrical and wireless devices commonly found in the home, workplace, school and community[1].As our reliance on these technologies intensifies, so does our exposure to electromagnetic fields (EMFs), raising questions about their long-term consequence. Studies have indicated that prolonged exposure to high levels of electromagnetic radiation may have adverse effects on the environment. For instance, it has been observed that certain wildlife species are sensitive to electromagnetic fields, affecting their behavior, navigation, and reproductive patterns[2]. Additionally, the electromagnetic pollution generated by human activities contributes to the alteration of natural electromagnetic environments, potentially disrupting ecosystems and biodiversity[3]. Human health is another focal point of concern, given the omnipresence of electronic devices and wireless communication. The increasing use of mobile phones, Wi-Fi networks, and other wireless technologies exposes individuals to varying degrees of electromagnetic radiation. Some research suggests a potential link between prolonged exposure to EMFs and health issues such as sleep disturbances, headaches, and an increased risk of certain cancers[4]. Furthermore, the evolving landscape of technology introduces new challenges as 5G networks are deployed, intensifying the debate on their potential health implications. As we delve into this intricate web of electromagnetic fields, it is imperative to critically examine existing data and research findings to better comprehend the multifaceted impact of electromagnetic radiation on both the environment and human well-being. This exploration is crucial in formulating informed policies and adopting technologies that strike a balance between the conveniences of modern life and the preservation of environmental and human health[5].

Electromagnetic Radiation

A wide range of energy waves, from radio waves with large wavelengths to gamma rays with very small wavelengths, are together referred to as electromagnetic radiation. With oscillating electric and magnetic fields perpendicular to each other and the direction of motion, this radiant energy travels across space like a wave[6]. The spectrum is made up of a variety of waves with varying frequencies, wavelengths, and energies. These waves include visible light, ultraviolet, X-rays, gamma rays, infrared, and radio waves. Surprisingly, every element of this spectrum has a specific function: radio waves transmit information, microwaves heat objects, visible light is important for photosynthesis in biology and X-rays may be used for medical imaging diagnostics. Fundamentally, electromagnetic radiation comes from a variety of natural sources, including the sun, stars, and Earth itself. However, human activity also produces a significant quantity of electromagnetic radiastion, particularly from power lines, wireless communication, and technological equipment[7]. Although radiation plays a vital part in both natural processes and technology, prolonged exposure to certain types of radiation, such as ionizing radiation or UV radiation from the sun, may be harmful to health. It can damage DNA and raise the chance of developing certain types of cancer[8]. Comprehending and using the characteristics of electromagnetic radiation has not only transformed communication and technology but also significantly contributed to scientific research and medical progress[9].

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

Ujjwal 2018-19

VOL. XL
Part - III

ISSN : 0587-1646
March, 2019

अन्वीक्षा

ANVĪKṢĀ

RESEARCH JOURNAL OF THE DEPARTMENT OF SANSKRIT
(REFEREED JOURNAL)

General Editor
Prof. Tapan Sankar Bhattacharyya

JADAVPUR UNIVERSITY, KOLKATA - 700 032

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA CHITTARANJAN

ujjwal sarkar

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

LIFE AND WORKS OF MM. ANANTALAL THAKUR

UJJWAL SARDAR

Mahamahopadhyaya Anantalal Thakur, an uncommon name in the study of Sanskrit and Sanskrit Nyāyaśāstra in the twenty-first century. He was dedicated to promoting and developing of Indian culture. In the field of Manuscriptology the place of Anantalal Thakur was just after the reputed pioneers of Bangladesh like Haraprasad Sastri, Rajendralal Mitra and Chintaharan Chakravarti. Anantlal Thakur was born on Thursday 23rd Kartik of 1323B.S. (1916 A.D) in the line of Sadhak Krishna Jivan Thakur Chakrabarty in Unashia village, a famous cultural center of Kotwalipara Pargana of Faridpur district of undivided Bengal. The ***Yajana-Yājana-Adhyana-Adhyāpana*** was the occupation of his father Pandit Gobinda Chandra Thakur. He was greatly influenced by his father's simple and austere life, patriotism and deep knowledge. Mother Soudamini Devi was a wonderful wife of diverse qualities. She was born in the family of line of Dikpala Pandit Madhusudan Saraswati.

From infancy, Anantalal had strong knowledge of wisdom. His talents and craft were extremely high quality. In addition to school education, infant Anantlal had studied the Kalāpa Vyākaraṇa in the Grāmin Catuspāṭhī. He was forced to leave his house under political pressure when he was involved in the svadeśī movement in his adolescence. Anantalal passed matriculation examination in first division (1936 A.D) from Kotalipara Union Institution a local school. After passing matriculation examination he came to Calcutta for higher studies and took shelter in house of his sister- in- law, professor Chintaharan Chakravarti, noted Indologist of all India repute. The next education he got in Sanskrit College. He passed Intermediate with 1st Division (1938) and passed B.A in Sanskrit Honours in 1941. Taking Nyāya Vaiśeṣika as a special paper he passed M.A. with first class first from Calcutta University in 1944. After passing M.A. he earned a scholarship for Indo Tibetan Studies. In 1945, he got the special title of Kābyatīrtha from the Vangīya Saṃskrita Śikṣā Pariṣat. He was a direct disciple of the two-Mahamahopadhaya Professor MM. Yogendranath Tarka-Sāṃkhya- Vedāntatīrtha and MM. Dr. Phaṇibhūṣana Tarkavāgīśa. During his college days he was the most affectionate of renowned Ācāryas like Prof. Dr. Surendranath Dasgupta, Dr. Dakshinaranjan Bhattacharya, Dr. Dinesh Chandra Bhattacharya, MM.Kalipada Tarkyācārya, Pandit Sakal Narayana Sastri, MM. Haranchandra Bhattacharya and so on. During College and Uni-

Ujjwal Sardar

CONTENTS

1. IN SEARCH OF ASIAN PHILOSOPHY
Pradyot Kumar Mukhopadhyay 1

2. आत्माद्यपवर्गान्तद्वादशप्रमेयाणां तत्त्वज्ञानं संसारमोक्षस्य यथासाक्षात्कारणं भवति-तथा वर्ण्यते
मृणालकान्तिवन्द्योपाध्याय: 30

3. पाणिनीयप्रस्थाने प्रातिपदिकार्थविचार:
तपनशङ्कर-भट्टाचार्य्य: 37

4. अथ अच्सन्धिप्रकरणम्
हरेकृष्ण-पट्टयोशी 41

5. UPANISHADIC EDUCATION AND RABINDRANATH TAGORE
Sanjiban Sengupta 44

6. REVISITING CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE WITH SPECIAL REFERENCE TO POVERTY
Shiuli Basu 48

7. সামাজিক মূল্যবোধ ঃ নীতিসাহিত্যের পাতা থেকে
দেবদাস মণ্ডল 55

8. सांख्यनये गुणत्रयस्य स्वरूपं जगत्सृष्टौ तेषामुपयोगित्वञ्च-एको विमर्श:
चिन्मय-मण्डल: 65

9. ব্যাকরণমতে নিপাতার্থ বিচার
সুদীপ্তা হালদার 69

10. संस्कृतभाषा तथा पाणिनीयं व्याकरणम्
रुवेल-पाल: 75

11. LIFE AND WORKS OF MM. ANANTALAL THAKUR
Ujjwal Sardar 84

12. ন্যায়দর্শনমতে অপবর্গবিচার
নীলাদ্রি ঘড়া 90

13. वेदाङ्गपरिचय:
निलेश-मिश्र: 96

14. SOCIAL CONDUCTS SUGGESTED IN ŚRĪMADBHAGAVAD-GĪTĀ

Ujjwal Sardar

102.

© 2018 IJRAR September 2018, Volume 5, Issue 3 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

Municipal Waste Management: Issues & Challenges

Sanchita Hazra
Assistant Professor, Department of Political Science,
Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan,
Paschim Bardhaman , West Bengal, India

2018 - 19

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

Abstract:

The increasing industrialization, rapid pace of urbanization and significant changes in the life styles along with the process of economic growth and development are mainly responsible for the generation of waste in the municipal areas in our country. All types of wastes are causing threats to sustainable development. In recent years, technologies are being developed globally in order to reduce the waste considerably as well as generating substantial quantity of decentralized energy.

However, municipal waste management is a relatively recent development in India. In our present study, we will address relevant issues and challenges which are being mainly confronted by the municipalities in the urban areas. We will showcase various challenges in the process of municipal waste management and their probable solutions.

Keywords: Municipal waste management,Sustainable development,Municipalities, Issues, Challenges, Solutions.

Prelude

The rapid industrialization, urbanization and changes in life style, etc. have given rise to generation of huge quantum of waste leading to increased threats to the environment. In recent years, technologies are being developed and demonstrated globally that not only help in reducing the quantum of waste considerably, but also could generate substantial quantity of decentralized energy.

However, solid waste management is a relatively recent development in Indian context. According to India's Constitution, Solid Waste Management (SWM) falls within the purview of the State Government. The activities are entrusted to Urban Local Bodies (ULB) through state legislations. In most of the Indian cities, the Municipal Solid Waste (MSW) collection, segregation, transportation, processing and disposal is carried out by the respective municipal corporations and the State Governments enforce regulatory policies from time to time.

Management of Municipal Solid Waste (MSW) is one of the most neglected areas of urban development in India. Magnitude and density of urban population in India is increasing at an alarming rate and consequently

CHITTARANJAN
DHU MAHAVIDYALAYA

2018-19

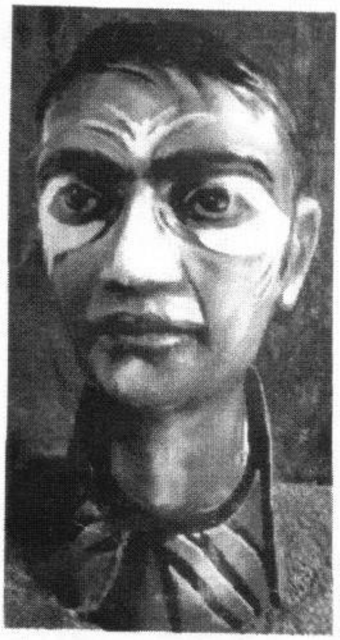

ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

जनवरी–मार्च 2019

₹15/-

DESHBANDHU MAHAVIDYALA
CHITTARANJAN

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

तीसरा प्रभावशाली बिन्दु फ्रिदा कालो का संघर्षपूर्ण जीवन है जिसने मात्र 47 वर्ष की उम्र में विपरीत परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को हासिल कर लिया। फ्रिदा की कला पर उपनिवेशवाद के विरोध का भी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। फ्रिदा कालो का जीवन उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत है जो छोटे–छोटे जीवन संघर्षों में अपने को अकेला और पराजित महसूस करते हैं। उसका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष, विपरीत परिस्थितियों में अपने को संभालने का जज्बा और चित्रकारी को समर्पित उनका व्यक्तित्व ऐसे कलाकारों के लिए प्रेरणस्रोत है जो छोटी–छोटी बाधा आने पर परिस्थितियों को दोष देते हुए अपना रास्ता बदल देते हैं। फ्रिदा की चित्रकारी नारीवादी आन्दोलन को नये आयाम देती हुई दिखाई देती है–"फ्रिदा के चित्रों में अनेक नये विमर्श उभर रहे हैं। नारीवाद एक महत्त्वपूर्ण विमर्श है जिसके अन्तर्गत फ्रिदा की नई और सारगर्भित व्याख्याएँ की जा रही हैं। माना जाता है कि फ्रिदा ने नारी जीवन में छिपे यथार्थ को पहली बार निर्भीकता से चित्रित किया है।" (अतीत का दरवाजा, पृष्ठ–95)

वैवाहिक जीवन की असफलता और माँ न बन पाने का दर्द उनकी चित्रकारी में उभर कर आता है। 'मेरा जन्म' (1932) नामक चित्र में एक बच्चे को दिखाया गया है। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है चूँकि पश्चिम में प्रजनन विषय पर इससे पूर्व ऐसे चित्र नहीं बनाये गये थे। यह चित्र नारी शक्ति का सबसे बड़ा आयाम उद्घाटित करने वाला चित्र माना जाता है। असग़र वजाहत का मानना है कि–"फ्रिदा के चित्रों में 'स्व' की रक्षा के लिए नारी संघर्ष की भावना भी दिखाई पड़ती है। नारी शक्ति और नारी अधिकार के स्वर फ्रिदा की कला में एक–दूसरे से मिल गये हैं। उनके चित्रों में 'नारी–पीड़ा' के बहुत मार्मिक प्रसंग भी दिखाई पड़ते हैं।" (अतीत का दरवाजा, पृष्ठ–95)

फ्रिदा कालो को देखकर अहसास होता है कि उसका घर पर्यटन के रूप में विकसित हो सकता है तो क्या हमारे देश में भी यह संभव नहीं हो सकता है? हमारे यहाँ भी बड़े–बड़े रचनाकार, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, शिक्षाविद् आदि के घर आज खण्डहर में तब्दील हो चुके हैं और उनकी ओर ध्यान देने वाला कोई नहीं है। क्या इन्हें देश के पर्यटन स्थल के रूप में नहीं विकसित किया जा सकता जो देश के आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नयन का माध्यम बन सके।

अंततः कहा जा सकता है कि असग़र वजाहत ने हिन्दी जगत को एक महत्त्वपूर्ण यात्रा–संस्मरण दिया है। इसमें यात्राओं के करने के तरीके के साथ ही यात्रा साहित्य लिखने की कला के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु लेखक ने सुझाये हैं। भाषा में सहजता विद्यमान है जिससे पाठक रोचकता के साथ इसे पढ़ कर विवेच्य स्थलों की जानकारी ले सकता है। ■

पता : सहायक आचार्य, हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मो. : 9453476741

यात्रा वृत्तांत : अतीत का दरवाजा, **लेखक** : असगर वजाहत, **प्रकाशक** : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली **मूल्य** : 215/–रुपए।

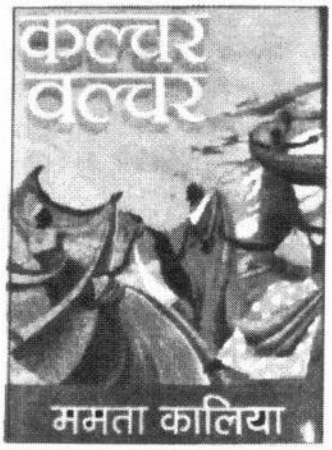

संस्थाओं के क्षरण की कथा कल्चर–वल्चर

■ कल्पना पंत

कोई भी रचना न केवल अपने समसामयिक हो रही विभिन्न घटनाओं से प्रभावित होती है अपितु उसमें उस समय विशेष की तमाम सामाजिक–सांस्कृतिक घटनाओं के सजीव चित्र भी किसी–न–किसी रूप में मौजूद रहते हैं। साहित्य केवल समाज का आईना भर नहीं होता है बल्कि उसमें सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य पर घटित हो रही घटनाओं के प्रति प्रतिक्रिया के साथ–साथ पाठकों को सचेत करने एवं उन परिस्थितियों में सुधार हेतु तीव्र इच्छा का भाव भी स्पष्टतः निहित रहता है। ममता कालिया के नवीनतम उपन्यास 'कल्चर वल्चर' के केंद्र में कोलकाता शहर है। इस उपन्यास में आए प्रमुख पात्र मसलन सुषमा अग्रवाल, नवीन मिश्र, बाबूलाल माहेश्वरी, सुधा देवी, बोस दा, उमा और कल्याण घोष, तारकेश्वर आदि के माध्यम से 'साहित्य संस्कृति भवन' के वास्तविक उद्देश्यों के क्षरण की कथा कही गयी है। यह उपन्यास देश में साहित्य, संस्कृति के संवर्धन हेतु स्थापित संस्थाओं की वर्तमान स्थिति को तो उजागर करता ही है साथ ही इन संस्थाओं की कार्यशैली से जुड़ी अन्य गतिविधियों का भी यथार्थ लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है।

साहित्य संस्कृति भवन प्रतीक है उन तमाम साहित्य संस्कृति से सम्बंधित संस्थाओं का, जो बाहर से भव्य, विशिष्ट और समृद्ध नजर आते हुए भी भीतर से खोखले हो चुके हैं। साहित्य संस्कृति भवन की बाहरी भव्यता तथा भीतरी खोखलेपन को उजागर करते हुए उपन्यासकार लिखती हैं 'कोलकाता के बीचोबीच मुख्य सड़क पर स्थित भवन की विशाल इमारत और व्यापक परिसर ऊपर से पक्का लगते हुए भी अंदर से खोखला होता जा रहा था। साहित्य संस्कृति भवन से दिन पर दिन साहित्य और संस्कृति, दोनों गायब होती जा रही थीं।' (पृ. 7)

हिंदी साहित्येतिहास की सुदीर्घ परंपरा में साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्थानों की भूमिका स्पष्ट नजर आती है। साहित्य को समृद्ध और बहुसंख्यक लोगों की अभिरुचि बनाने में इन संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किन्तु वर्तमान परिदृश्य में ऐसे

2018-19

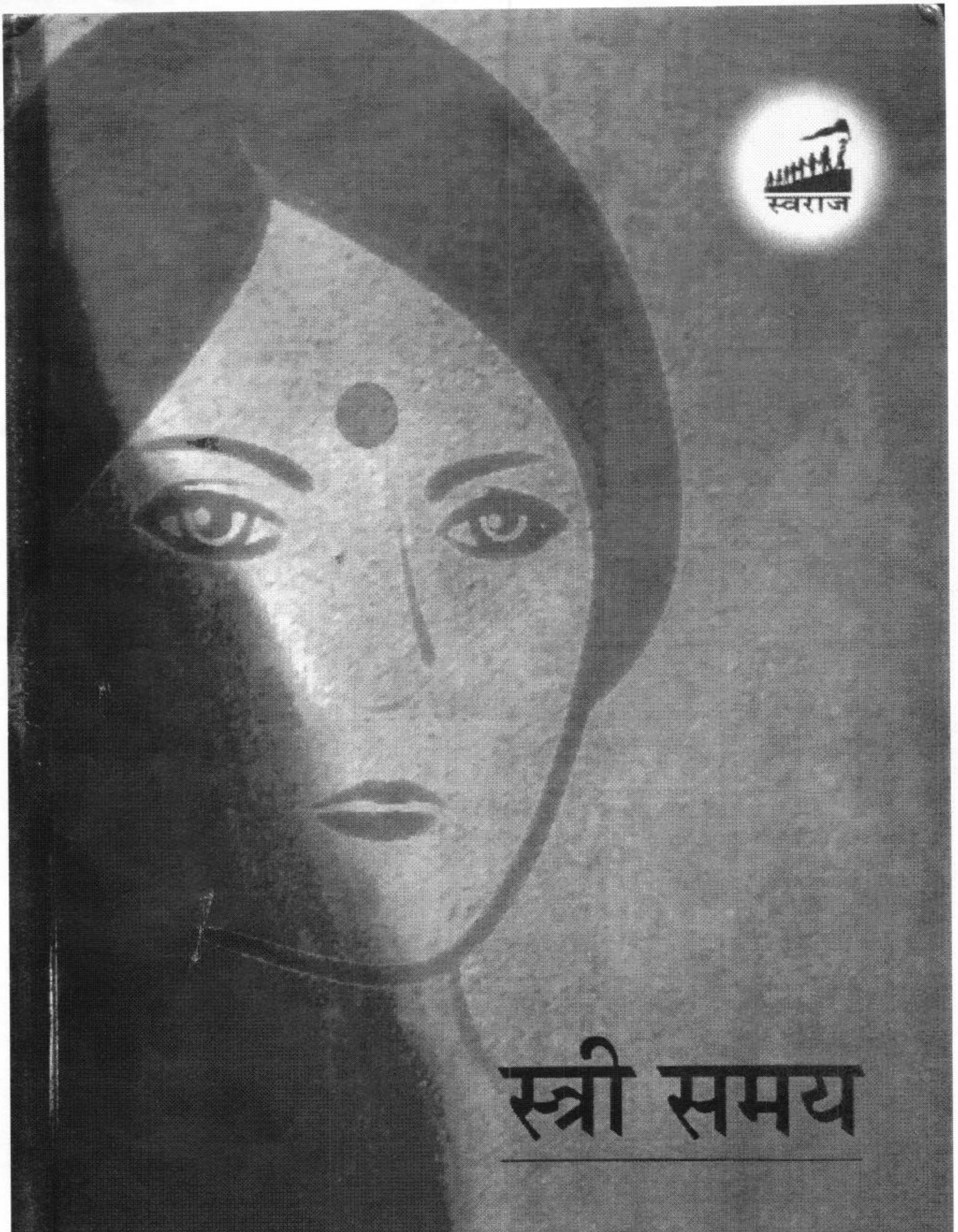

प्रधान कार्यालय

स्वराज प्रकाशन

4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-23289915
E-mail : swaraj_prakashan@yahoo.co.in

शाखा

288, ई.डब्लू.एस., शास्त्रीपुरम
आगरा-282007 (उ.प्र.)

© कल्पना पन्त

मूल्य : ₹ 950
प्रथम संस्करण : 2018
ISBN : 978-81-937568-1-2

अजय मिश्रा द्वारा **स्वराज प्रकाशन,** 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा ओम आफसेट, जगतपुरी शाहदरा, दिल्ली-110093 में मुद्रित

अनुक्रम

भूमिका 7

मुद्दों पर केन्द्रित

1. कम से कम एक दरवाजा — **सुधा अरोड़ा** 17
2. मीडिया की नजर में स्त्री — **इला प्रसाद** 26
3. सभ्य समाज का स्याह चेहरा — **अल्पना मिश्र** 29
4. इतिहास का अंधकूप बनाम बंद गलियों का रूह-चूह (गया में यौनकर्म और यौनकर्मी) — **संजीव चंदन** 34
5. हिन्दी ब्लॉगिंग को समृद्ध करती महिलाएँ — **आकांक्षा यादव** 50
6. विज्ञापन में महिला : देह और दर्द — **डॉ. चन्द्रभान सिंह यादव** 61
7. आवश्यकता है आज समाज को नया दृष्टिकोण अपनाने की — **डॉ. प्रीत अरोड़ा** 68
8. इस्लाम धर्म में स्त्री — **जनार्दन** 71
9. सेना में महिला अधिकारी की अस्मिता और पुरुष वर्चस्व के कुछ पहलू — **अंशू** 75

साहित्यिक विधाओं पर आधारित भक्तिकाव्य : स्त्री संदर्भ

1. बरजी मैं काही की नाहिं रहूं मीराबाई : हिंदी की पहली स्त्री-विमर्शकार — **रोहिणी अग्रवाल** 89
2. भक्ति काव्य के आईने में स्त्री का अक्स — **प्रमोद कुमार शर्मा** 113

उपन्यास और कविता : स्त्री जीवन के विविध रूप

1. आपकी धनिया (सन्दर्भः गोदान-प्रेमचंद) — **मैत्रेयी पुष्पा** 125
2. बाबा नागार्जुन के उपन्यासों में सात सवालों-सी सात नायिकाएं — **डॉ. (सुश्री) शरद सिंह** 135
3. नागार्जुन के उपन्यास और स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न — **श्रीधरम** 140
4. वे मनुष्य नहीं हैं (तसलीमा नसरीन की कवितायें उर्फ एक निष्कलंक स्वप्न का आख्यान) — **आशीष त्रिपाठी** 159

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan
DESHABANDHU MAHAVIDYALA CHITTARANJAN

स्त्री भाषा : प्रतीकों की नई दुनिया

1. स्त्री का भाषा-घर — अनामिका 179

व्यक्तित्व : स्त्री के विविध रूप

1. माया एंजेलो : मैं स्त्री हूँ — विजय शर्मा 209
2. अमृता शेरगिल : निर्झर बहता जीवन — वैभव सिंह 214

स्त्री विमर्श के अवधारणात्मक संदर्भ

1. नारी मुक्ति आंदोलन कुछ बुनियादी सवाल — कात्यायनी 227
2. हिन्दी नवजागरण और स्त्री शिक्षा का प्रश्न — गजेंद्र पाठक 243
3. नवजागरण और स्त्री — राज बहादुर यादव 248

दलित साहित्य लेखन में स्त्री

1. डॉ. अम्बेडकर का स्त्री-चिंतन — अनिता भारती 259
2. दलित साहित्य-विमर्श में स्त्री — बजरंग बिहारी तिवारी 274
3. देह से इतर स्त्री संघर्ष की दलित कहानियाँ — धर्मेन्द्र कुमार सिंह 295

2018-19

13. पाच्र्ड : पितृ सत्तात्मक व्यवस्था को पलटने का साहस — *विपिन शर्मा* 12[illegible]

14. चुटकी भर सिन्दूर से उठते कुछ सवाल (सिनेमा में स्त्री: फिल्म 'अर्थ' और 'क्वीन' के विशेष सन्दर्भ में) — *आशीष कुमार* 132

15. मैड मैक्स : फ़्यूरी रोड एक्शन मूवी नारीवादी फिल्म हो सकती है — *अनघा मारोषा* 140

16. मेघे ढ़ाका तारा : एक स्त्री का अन्तहीन संघर्ष — *अजय मेहताब* 143

17. डांसर इन द डार्क : एक क्लासिक तथा कालजयी फिल्म — *सी. भास्कर राव* 149

18. वाटर : विधवा जीवन की बहुआयामी यातनाओं का दस्तावेज — *धनंजय कुमार चौबे* 160

19. बाग़वान : परिवार की धुरी — *अभिषेक शर्मा* 166

20. कॉरपोरेट : व्यूह में स्त्री — *नीलम कुलश्रेष्ठ* 170

21. सिने-विमर्श की जानिब से स्त्री के विवाहेतर सम्बन्ध — *सत्यदेव त्रिपाठी* 176

22. चाँदनी बार : रोशन जहाँ की अँधेरी गलियाँ — *कल्पना पन्त* 187

23. द जापानीज़ वाइफ़ : एक हाइकु — *आभा विश्वकर्मा* 193

24. द नेमसेक : तब्बू बनाम प्रवासी आशिमा — *ऋतु शुक्ल* 20१

25. पुनश्च : सिर उठा कर जीने की तमन्ना — *विजय शर्मा* 213

सहयोगी 221

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

DESHABANDHU MAHAVIDYALA
CHITTARANJAN

2018-19

The Many Dimensions of Keshari Nath Tripathi's Poetry

(A Collection of Seminar Articles)

Chief Editor

Dr. Tushar Kanti Banerjee

The Many Dimensions of
Keshari Nath Tripathi's Poetry | Dr. Tushar Kanti Banerjee
Chief Editor

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

DESHABANDHU MAHAVIDYALA
CHITTARANJAN

কবি কেশরীনাথ ত্রিপাঠীর ভাবনায় আধ্যাত্মিকতা ও দার্শনিক

তীর্থ মন্ডল
সহকারী অধ্যাপক রাষ্ট্রবিজ্ঞান বিভাগ, দেশবন্ধু মহাবিদ্যালয় চিত্তরঞ্জন
ISBN : 978-93-88868-20-4

কবি কেশরীনাথ ত্রিপাঠীর 'উন্মুক্ত' কাব্যগ্রন্থ এক জীবনমুখী কাব্যগ্রন্থ। এই কাব্যগ্রন্থের মধ্যে কবির বহুমুখী প্রতিভার পরিচয় প্রকাশিত হয়েছে। কবির বিচিত্র ভাবনা যেমন জাতীয়তাবাদ, দেশাত্মবোধ, প্রাচ্য আর পাশ্চাত্যের প্রেম, অসীম আর সসীম-এর মেলবন্ধন, মানুষের নানা সমস্যা, সমাজের, জাতির, প্রকৃতির অবক্ষয় সবকিছু এক সূতোয় গেঁথে ফেলেছেন। 'উন্মুক্ত' কাব্য এক পাওনার হিসাব মিটিয়ে তথা মনের দ্বন্দ্ব ঘুচিয়ে শান্তির নীড়ে বাস করার আহ্বান।

'উন্মুক্ত' কাব্যে কবি বলেছেন মনের কোন বয়স নেই, যে কোন বয়সেই মানুষ সজীব হয়ে উঠতে পারে। 'উন্মুক্ততা' হলো মনের এক প্রবৃত্তি। তার একটা গতি আছে, আর আছে চপলতা। মনের অসীম ক্ষমতা রয়েছে। তাকে বশ করে সামনের দিকে এগিয়ে যেতে হবে। এই প্রক্রিয়া যদি কেউ করে তাহলে সে একদিন না একদিন অসীমে পৌঁছে যাবে, কিন্তু মানুষের মন বড় চঞ্চল—গীতায় অর্জুন বলেছেন—প্রভু আমার মন বড় চঞ্চল। প্রভু বলেছেন এটা দোষ নয়, এটা গুন। চঞ্চলতা যার মধ্যে নেই সে কোন কিছুই উপলব্ধি করতে পারবে না। প্রভু বলেছেন যে দৌড়াতে পারে সে স্থিরও হবে।

মন দু-জায়গায় স্থির হয়। এটা আমার কথা নয়— গুরু পরম্পরায় সৎসঙ্গের কথা। মনকে স্থির করতে হলে সৎসঙ্গ করতে হয়। এক জীবনে যা আকর্ষক মহত্ত্বপূর্ণ লাগে সেখানেই মন স্থির হয়। যেমন কোন যুবতীর যদি কোন যুবককে আকর্ষক লাগে তাহলে মন কিন্তু সেখানেই স্থির হয়। এখানে এ প্রসঙ্গে বিস্তারিত আলোচনার প্রয়োজন নেই। আবার যে ব্যক্তির বিষয়-সম্পত্তি আকর্ষক লাগে বা মহত্বপূর্ণ লাগে সেখানেই তার মন স্থির হয়। কবির কাব্য

"EMERGING POSSIBILITIES IN SANSKRIT STUDIES"

REVIEWED

NATIONAL SEMINAR PROCEEDINGS

21ST-22ND JANUARY, 2019

Edited by

Anupam Dutta Lokesh Mondal

Department of Sanskrit

RANIGANJ GIRLS' COLLEGE

2019

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

DESHABANDHU MAHAVIDYALA CHITTARANJAN

103.a

Ujjwal Sardar

Original Scan

103.b

Published by :
Raniganj Girls' College

© Editors

Published : 9th December, 2019

Type Setting & Printed by :
G D R Computer Centre
Krishna Ram Bose Street
Kolkata-700 004
E-mail : gamapatighosh2009@gmail.com

ISBN : 978-93-81669-36-9

₹ 600/-

RABINDRA BHARATI UNIVERSITY

PROFESSOR GOPALCHANDRA MISRA

Professor of Sanskrit, Rabindra Bharati University
Former Vice Chancellor, University of Gour Banga
Former Dean of the Faculty of Arts, Rabindra Bharati University
Former Head, Department of Sanskrit, Rabindra Bharati University

Office :
Rabindra Bharati University
Emerald Bower Campus
56A, B. T. Road,
Kolkata - 700 050

Residence :
6A, Gopal Lal Thakur Road
Baranagar,
Kolkata - 700 036
Phone : 9433119196
Email : gm.profssor@gmail.com

MESSAGE

I'm immensely delighted to learn that Raniganj Girls' College in collaboration with Sailajananda Falguni Smriti Mahavidyalaya is going to publish the Seminar Proceedings entitled "EMERGING POSSIBILITIES IN SANSKRIT STUDIES" in the shape of a book. The book is to be edited by Shree Anupam Dutta and Shree Lokesh Mandal jointly.Hence the book is going to be enriched with multifarious contributions of a lot of Scholars and academicians.

In this regard, however, I like to extend my heartfelt congratulations to the people of this sort of academic interest the endeavour of whom is laudable and encouraging.

Gopalchandra Misra
(Professor Gopalchandra Misra)

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

জ্ঞানশ্রী মিত্রের নিবন্ধাবলী ও মহামহোপাধ্যায় অনন্ত লাল ঠাকুর

উজ্জ্বল সরদার

সহঅধ্যাপক, দেশবন্ধু মহাবিদ্যালয়, চিত্তরঞ্জন

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

চলচ্চিত্তং চলবিত্তং চলজ্জীবনযৌবনম্।
চলাচলমিদং সর্বং কীর্ত্তির্যস্য স জীবতি॥

মহাভারতের এই বাণীর সার্থক নাম মহামহোপাধ্যায় অনন্তলাল ঠাকুর। তিনি ভারতীয় দর্শন ও সংস্কৃতির পর্যালোচনায় প্রবদপ্রতিম পুরুষ। ন্যায়-বৈশেষিক দর্শন থেকে বিদেশীয় দর্শন, বৌদ্ধদর্শন, বেদ, রামায়ণ, মহাভারত, সংস্কৃত নাটক-কাব্য-সাহিত্য তথা পুঁথিবিদ্যা নানা বিদ্যাক্ষেত্রেই তাঁর প্রবেশ ছিল সুগম। দ্যুতিমান ব্যক্তিত্বের অধিকারী অধ্যাপক অনন্তলাল ঠাকুর বৌদ্ধদর্শনের বহু প্রাচীন পুঁথি সম্পদনা করে গ্রন্থরূপে প্রকাশ করেছেন। পুঁথি সম্পদনার ক্ষেত্রে তাঁর অন্যতম কাজ হল—বৌদ্ধন্যায়চার্য জ্ঞানশ্রীমিত্রের রচনাগুলির দুরূহ লিপি উদ্ধার করে প্রতিপক্ষদের অভিমত থেকে লুপ্ত ন্যায়দর্শনের পাঠ পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করা।

তিনি জ্ঞানশ্রীমিত্রের উপর কাজ করার প্রথম অনুপ্রেরণা পান গুরু ম.ম. ফণিভূষণ তর্কবাগীশ মহাশয়ের কাছে। তর্কবাগীশ মহাশয় বলেছিলেন, শংকরাচার্যের আবির্ভাবের পর আমরা বৌদ্ধদের তাড়িয়ে দিয়েছি, তাদের গ্রন্থ পুড়িয়ে দিয়েছি।

কিন্তু খোঁজ করলে জ্ঞানশ্রীমিত্র এবং রত্নকীর্তির বই খুঁজে পাওয়া যাবে এবং এই দুজন বৌদ্ধনৈয়ায়িকের গ্রন্থ্ উদ্ধার করা গেলে ন্যায়শাস্ত্রের প্রভূত উপকার সাধিত হবে। দুঃখের বিষয় ঠাকুর অক্লান্ত পরিশ্রমে জ্ঞানশ্রীমিত্র এবং রত্নকীর্তির কাজ সমাপ্ত করলেও তর্কবাগীশ মহাশয় তা দেখে যেতে পারেননি।

তিব্বতীয় সংস্কৃত গ্রন্থমালার পঞ্চম গ্রন্থ 'জ্ঞানশ্রীমিত্র নিবন্ধাবলী'। এখানে বৌদ্ধদর্শনের উপর জ্ঞানশ্রী মিত্রের কাজগুলি নিবন্ধাকারে সংরক্ষিত রয়েছে। দ্বারভাঙ্গার মিথিলা বিদ্যাপীঠের প্রাধ্যাপক থাকাকালে তাঁর সম্পদনায় ১৯৫৯

Ujjwal Sardar 103

ISSN 09723668

IASLIC Special Publication

(Peer Reviewed)

Volume No. 57

LIS Education in India: Current Scenario and Future Strategies

IASLIC 28th National Seminar 2018

PROCEEDINGS AND PAPERS

(Peer Reviewed Post Seminar Publication)

Indian Association of Special Libraries & Information Centres

P-291, CIT Scheme No. 6M, Kankurgachi, Kolkata - 700054
Email : iaslic.sem@gmail.com Website : www.iaslic1955.org.in

Attested
Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

ISSN 0972 3668

IASLIC Special Publication

(Peer Reviewed)

Volume No. 57

LIS Education in India: Current Scenario and Future Strategies

SPECIAL INTEREST GROUP

SIG 01 : Social Sciences Information
Rabindranath Tagore's vision on Libraries and its relevance in new era

SIG 02 : Computer Applications in LIS
Data Management in Libraries

PROCEEDINGS AND PAPERS

(Peer Reviewed Post Seminar Publication)

IASLIC 28th National Seminar 2018

HELD AT CENTRAL LIBRARY, VISVA-BHARATI, SANTINIKETAN DURING NOVEMBER 27-29, 2018

Attested
Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

INDIAN ASSOCIATION OF SPECIAL LIBRARIES AND INFORMATION CENTRES (IASLIC)
P-291, CIT Scheme No. 6M, Kankurgachi, Kolkata 700054
e-mail : iaslic.sem@gmail.com Website : www.iaslic1955.org.in

2018

© IASLIC 2018

All rights are reserved. No part of this Publication can be used nor reproduced in any form or by any means – electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise. It can neither be stored in a database retrieval system, without prior written permission of the publisher except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. Making copies of any part of the Publication for any purpose other than owner's own personal use, is a violation of copyright law.

Authors can self-archive the author's final version of articles for personal use, for internal institutional use and for scholarly sharing purposes with proper acknowledgement, attribution and credit for the published work.

The publisher makes no representation, expressed or implied, with regard to the accuracy of the information contained in the Publication and cannot accept any legal responsibility for any error or omission that may be found in it.

Selected peer-reviewed papers those are presented in the conferences / seminars are only included in the respective post-conference / post-seminar annual IASLIC Special Publication (ISSN 0972-3668) with a consecutive volume number.

Members of the Editorial Board

Prof Amitabha Chatterjee, Shri S B Banerjee,
Smt Indrani Bhattacharya, Prof Arjun Dasgupta,
Prof Narendra Lahkar, Prof Krishnapada Majumder,
Prof Pijushkanti Panigrahi (ORCiD: 0000-0002-5340-7512)
Prof. Juran Krishna Sarkhel, Smt Banasree Roy, Convenor

Editorial Assistants

Sk Nausad Kabir
Sri Basobendu Halder

Price : Rs. 490.00 **US $ 80**

Published by The General Secretary, IASLIC on behalf of Indian Association of Special Libraries and Information Centre (IASLIC), P-291, CIT Scheme No. 6M, Kankurgachi, Kolkata – 700 054. Phone : (033) 23629651, email : iaslic.india@gmail.com

Printed by Modern Graphica, 41, Gokul Boral Street, Kolkata – 700 012

IALSIC 28TH NATIONAL SEMINAR 2018

November 27-29, 2018
Central Library, Visva-Bharati, Santiniketan

On

LIS Education in India : Current Scenario and Future Strategies

CONTENTS

Page

PROCEEDINGS

Presidential Address 2018
Dr. Jatindra Nath Satpathi, President, IASLIC 7

General Secretary's Address
Sri Sajal Kanti Goswami, General Secretary 11

IASLIC 28th National Seminar 2018 : Proceedings and Recommendation 13
Prof. Parthasarathi Mukhopadhyay, Rapporteur General

PAPERS

MT 1 Background : History and development of LIS education

1. What Ails LIS Education in India and What is the Panacea? 23
Amitabha Chatterjee

2. Library and Information Science Education in India : Issues and Challenges 33
Narendra Lahkar

3. Revamping LIS Education in Assam : Need of the Hour 39
Sanjay Kumar Singh

4. Post 50 years of LIS Departments in Eastern India : An overview 47
Paromita Debnath

5. History and Development of Library Science Education in Assam with special reference to Gauhati School 56
Rajani Kanta Barman and Kukila Goswami

6. Library and Information Science Education in India : Special reference to Central Universities 62
Jitendra Kumar and Ajay Kumar Sharma

MT 2 General considerations

7. Measuring of Library and Information Science Education in Universities with respect to North East Region in India through Website Analysis — 69
Bikramaditya Barman and Gouri Sankar Karmakar

MT 3 Infrastructure requirements

8. LIS Education & Research in West Bengal : An appraisal and approach for Qualitative Development — 78
Milan Kumar Sarkar and S B Banerjee

9. Role of Open Access Resources in LIS Education and Research — 90
Karan Kumar

MT 4 Curriculum design, development and evaluation

10. Strategic Development of Library and Information Science Education in India : An overview of the Integrated MLIS Course recently Introduced by the University of Burdwan — 97
Samayita Dutta

11. Students' Attitude towards CBCS in the Department of Library and Information Science of the University of Kalyani — 102
Sibsankar Jana and Anusua Bose

12. Trend of BLibISc Curriculum : A Case Study in Vidyasagr University — 110
Pijish Kanti Jana and Sudeshna Panda

13. Evaluation of ICT components in MLIS Curriculum in North East India : A Study — 116
Sangita Sarkar, Himanish Roy and Sourav Mazumder

MT 5 Teachers and teaching methods

14. Internship of LIS students : A Case Study of Jadavpur University — 124
Debashish Mukherjee and Udayan Bhattacharya

15. Credibility of different Teaching Methods in the eyes of LIS students and students of other Disciplines of Rabindra Bharati University : A Comparative Study — 131
Snigdha Naskar and Sutapa Paul

16. LIS Education in India : Teachers and Teaching Methods in the Digital Era — 141
Pulak Saha

MT 6 Open and Distance Learning (ODL) in LIS

17. Library and Information Science Online Courses on SWAYAM : An Appraisal — 150
Abhijit Chakrabarti and Sukanta Maji

18. Self-Learning print materials of Bachelor of Library and Information Science course in NSOU: A Study — 157
Dipshikha Mukherjee

19. BigBlueButton : An Emerging Tool for Enhancing the Learners' Engagement in Digital Learning Environment — 173
Md Ajimuddin Sk, Sibsankar Jana and Md Azizur Rahman

Attested
Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

MT- 4 CURRICULUM DESIGN, DEVELOPMENT AND EVALUATION PAPER

MT - 04 - 01

STRATEGIC DEVELOPMENT OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE EDUCATION IN INDIA : AN OVERVIEW OF THE INTEGRATED MLIS COURSE RECENTLY INTRODUCED BY THE UNIVERSITY OF BURDWAN

Samayita Dutta[1]

***Abstract** : Library and information science education is changing over time by extending the field of research in various dimensions of the study. Several committees have been set up to reshaping the subject idea and modernizing the syllabus. The courses such as certificate courses, BLIS, MLIS, Integrated MLIS, Diploma in Library and Information Science, Post Graduate Diploma in Library and Information Science, M. Phil, and PhD courses are being offered in the colleges and Universities in India. The first certificate course in Library and Information Science was conducted by Madras Library Association in the year of 1929. The post graduate diploma course was introduced by the Madras University, Banaras Hindu University, Bombay University, and University of Calcutta in the year of 1937, 1941, 1943 and 1945 respectively. Delhi University started the post graduate diploma course in the year of 1947. The advisory committee under the chairmanship of S.R Ranganathan was appointed in the year of 1960 to standardize the curriculum; Curriculum Development Committee (CDC) under the chairmanship of Prof. P.N Kaula for revision, modification of the curriculum; Karisiddappa Committee under the chairmanship of Prof. C. R. Karisiddappa for redesigning, suggestion and overall evaluation of the curriculum. These efforts have been undertaken in developing & modernizing the LIS education with the changing needs and technological advancements. The growth of LIS education was recognized significantly during the 1960s. The change in the content of the syllabus and inclusion of information science as a subject was required for the setting up of the information centers, documentation centers during the 1970s. Karisiddappa Committee (2001) suggested for the introduction of the integrated course of MLIS and draw attention on the infrastructural requirement and the course structure, credit requirement, teaching hours etc for the development of the integrated course. This study exhibit the advantages of 2 year integrated courses and specially highlighted the open courses recently adopted by The University of Burdwan.*

***Keywords** : Library and Information Science education, MLIS Curriculum, Integrated MLIS Curriculum, LIS Curriculum, Open course.*

1. Librarian, Deshabandhu Mahavidyalaya, Paschim Burdwan, West Bengal, samayita_634@rediffmail.com

REFERENCES

1. Asundi,A. Y& Kempraj, T. D (1989).A Perspective Survey of Curriculum of Library science in Indian Universities. In, Library & Information Science education in India: New perspectives. Proceedings of the National seminar organized by the department of Library & Information Science, University of Kerala, and 1986.Kerala: Valsaprinters, 1989, p.121-130.

2. Asundi A. Y & Karisiddappa C. R (2007).Library and Information Science Education in India: International Perspectives with Special Reference to Developing Countries. Desidoc Bulletin of Information TECHNOLOGY. 27, 2; 5-11. Available at https://publications.drdo.gov.in/ojs/index.php/djlit/article/ view/127/42

3. Baradol, A.K & Kumar S. S (1998).Interdisciplinary Nature of Library Science. Annals of Library Science and Documentation. 45, 2; 49-56.

4. Dasgupta, Arjun (2009).Preparing Future Librarians in India: A Vision for LIS Schools of Indian Universities in the 21st Century. World Library and Information Congress: 75th IFLA General Conference and Council, August 2009, Milan, Italy. 1-15.Available at https://www.ifla.org/post-wlic/2009/ 126_dasgupta en.pdf.

5. Deka, Dipen& Mazumder Nirmal Ranjan (2016).Library & Information Science Education and Competency Management. 10th Convention PLANNER-2016, NEHU, Nov 2016.cINFLIBNET Centre,

Attested
Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

Gujarat. 154-160.Available at http://ir.inflibnet.ac.in:8080/ir/bitstream/1944/2023/1/19.pdf.dipen deka.

6. Joshi, 6.Manoj K (2010).Library and Information Science Education in India: Some Government Initiatives. Desi doc Journal of Library & Information Technology. 30, 5.67-73.Available at https://www.researchgate.net/profile/ Manoj_Joshi22/publication/270492370

7. Singh, Joginder (2018).Curriculum reforms and quality education in library & information Science departments in Indian Universities and institutes: An overview by Dr. Join der Singh. International Journal of Academic Research and Development. 3, 2; 653-657.Retreived from www.academicsjournal.com/ download/1678/3-2-153-832.pdf.

8. UGC (2001).UGC model curriculum - library and information science. New Delhi: Sri Prem Verma.Available at http://www.ugc.ac.in/oldpdf/model/ curriculum/lib-info-science.pdf

9. Master of Library and Information Science (MLIS) Syllabus (Choice Based credit System) .The University of Burdwan. With effect from 2014-2016 academic session. Available at www.buruniv.ac.in

MT - 04 - 02

STUDENTS' ATTITUDE TOWARDS CBCS IN THE DEPARTMENT OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE OF THE UNIVERSITY OF KALYANI

Sibsankar Jana[1], Anusua Bose[2]

Abstract : *This paper tried to describe Choice Based Credit System (CBCS) in brief. The present work is basically a pilot study among the students of MLIS of University of Kalyani and students of other departments those who took LIS as CBCS subject in University of Kalyani. The main objective of this study was to know the satisfaction level about the choice of CBCS subject, teachers' effort in teaching the CBCS subject, matching between course covered in class and actual syllabus, and course content of CBCS subject. Besides the above, the other objectives are that to know the agreement level on the opinion 'getting opportunity of CBCS in each semester', appropriateness of CBCS in the Indian education system, and provision of online course as CBCS subject having equivalent credit. These all opinions and agreements options have been compared based on the factors gender, percentage of marks in 1st semester and CBCS subject.*

A survey was conducted by distributing questionnaire among 50 students in which 15 are from the Department of Library and Information Science and remaining 35 students from other departments of the University of Kalyani. Only 46 responses are received through their filled-in questionnaires. In the present study, 14 null hypotheses (reverse to this null hypotheses are alternative hypotheses) are formulated about the satisfaction levels and opinion's agreement levels with respect to gender, percentage of marks in 1st semester, CBCS subject and in general perspective.

After analysis the data, it is found that 76% students in their CBCS subject, 67% students in 'teachers' effort in CBCS class', 41% students in 'course covered in comparison to curriculum' and 48% students in 'course contents of CBCS subject' are satisfied or highly satisfied irrespective of other factors like gender, percentage of marks in 1st semester and CBCS subjects. Again, it is also found that 17% students are in the opinion of 'There should be another opportunity to CBCS subject in each semester', 35% students are in the opinion of 'The CBCS is appropriate for the betterment of education in our Indian education system' and 59% students are in the opinion of 'The University must have the option for completing online course as CBCS subject having equivalent credits. In these case they are either agreed or strongly agreed irrespective of other factors.

Keywords : *Credit Based Choice System, CBCS Curriculum, LIS education, University of Kalyani*

1. *Assistant Professor, Department of Library & Information Science, University of Kalyani, West Bengal, sib_jana@yahoo.com*
2. *Student, Department of Library & Information Science, University of Kalyani, West Bengal, anubose1993@gmail.com*

REFERENCE

A novel Bengali Language Query Processing System (BLQPS) in medical domain

Article type: Research Article
Authors: Mandal, Kailash Pati[a,*] | Mukherjee, Prasenjit[a] | Chakraborty, Baisakhi[a] | Chattopadhyay, Atanu[b]
Affiliations: [a] Department of Computer Science and Engineering, National Institute of Technology, Durgapur, India | [b] Department of BBA (H) and BCA (H), Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan, India
Correspondence: [*] Corresponding author: Kailash Pati Mandal, Department of Computer Science and Engineering, National Institute of Technology, Durgapur, West Bengal, India. Tel.: +91 7407367323; E-mail: biltu.cse@gmail.com.
Abstract: Bengali is the seventh most widely spoken language in the world. Many researchers are working on developing Bengali language based information retrieval, question-answering, query-response systems. The proposed Bengali Language Query Processing System (BLQPS) is based on natural language query-response model. Bengali language has been used in the model to extract knowledge data from a default database. The system is based on scoring and pattern generation algorithm that is able to generate structure query language (SQL) from natural language query in Bengali with the help of a synonym database. The proposed system is domain based and a large number of words have been initialized in the synonym database. The SQL is formulated from semantic analysis. Further, the generated SQL has been used to extract knowledge data in Bengali language from the default database.
Keywords: Query-response, scoring and pattern generation based algorithm, Structure Query Language (SQL), Semantic analysis, Bengali Language Query Processing System (BLQPS), Natural Language Processing (NLP)
DOI: 10.3233/IDT-180074
Journal: Intelligent Decision Technologies, vol. 13, no. 2, pp. 177-192, 2019
Published: 17 May 2019

Price: EUR 27.50

Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan